कृषि विज्ञान केंद्र,सतना

दीनदयाल शोध संस्थान

रामतिल की उन्नत उत्पादन तकनीक

संकलनकर्ता

डॉ. अजय चौरसिया

विषय वस्तु विशेषज्ञ (शस्य विज्ञान)

तकनीकी सहयोग

इंजी. हरेन्द्र कुमार

कार्यक्रम सहायक (संगणक)

वित्तीय सहयोग

अखिल भारतीय तिल एवं रामतिल अनुसंधान परियोजना, दीनदयाल शोध संस्थान- कृषि विज्ञान केंद्र, मझगवां, जिला-सतना (म.प्र.)

रामतिल की फसल को लगभग सभी प्रकार की भूमि में उगाया जा सकता है पहाड़ी खेत वाली हल्की भूमि या ढालूदार भूमि में यह फसल विशेष रूप से उगाई जाती है। इसकी अच्छी वृद्धि के लिए 20-38 से.ग्रे. तापमान उपयुक्त होता है ।

बुवाई प्रबंधन:-

खेत की तैयारी :- कल्टीवेटर से दो बार जुताई करने के बाद बखर चलाना चाहिए एवं खेत समतल करना चाहिए। उन्नत किस्में :- बुवाई के लिए उन्नत किस्मों का चयन अत्यन्त आवश्यक है। मध्यप्रदेश के लिए अनुशंसित किस्में निम्नलिखित हैं:

जे.एन.एस. 30:- अवधि 115-120 दिन, उपज 2.5-3 कुंटल प्रति एकड़, मोटा दाना, 48-50% तेल प्रतिशत होता हैं

जे.एन.एस.28:- अवधि 115-120 दिन, उपज 2- 2.5 कुंटल प्रति एकड़, मोटा दाना, 48-50% तेल प्रतिशत, आल्टरनेरिया एवं सरकोस्पोरा रोग रोधी होती हैं।

जे.एन.सी. 6:- अवधि - 95 से 100 दिन, उपज 2-2.5 कुन्टल/एकड़, तेल - 40 प्रतिशत, पत्ती धब्बे के लिए सहनशील होती हैं।

जे.एन.सी.1:- अवधि - 95 से 102 दिन, उपज 2.5 कुन्टल/एकड़, तेल - 38 प्रतिशत, दाने का रंग काला होता हैं।

जे.एन.एस.9:- 95 से 100 दिन, उपज 2.5-3 कुन्टल/एकड़, तेल - 39 प्रतिशत होता हैं।

बुवाई का समय:- खरीफ में बुवाई का उपयुक्त समय जुलाई के तृतीय सप्ताह से अगस्त के दूसरे सप्ताह तक एवं रबी में सितम्बर माह उपयुक्त होता है ।

पौध अंतरण:- कतार से कतार की दूरी 30 सेमी एवं पौधे से पौधे की दूरी 10 सेमी रखना चाहिए। बीज 3 सेमी. की गहराई तक बोया जाना चाहिए। कतार में बोनी करनी

चाहिए। ढाल वाली भूमि में ढलान के विपरीत दिशा में कतारों में बोनी करना चाहिए।

बीज दर:- 2 किग्रा प्रति एकड़ बीज पर्याप्त होता है। बुआई के पूर्व बारीक रेत या वर्मी कम्पोस्ट के साथ बीज का मिश्रण कर लिया जाता है। जिससे भूमि में पौधे से पौधे की दूरी पर्याप्त हो जाती है।

बीजोपचार:- बीज एवं मृदा जनित रोगों से बचाव के लिए बोने से पहले बीज को कार्बेन्डाजिम 5 ग्राम या ट्रायकोडर्मा विरडी 10 ग्राम/कि.ग्रा की दर से उपचारित करना चाहिए। इसके बाद बोते समय स्फुर घोलक बैक्टीरिया (पी.एस.बी.कल्चर) 10 ग्रा. प्रति किलो बीज का उपयोग भी करना चाहिए।

विरलन प्रक्रिया:- फसल अंकुरण के लगभग 15 दिन बाद या 10 सेमी ऊंचे पौधे होने पर विरलन प्रक्रिया द्वारा पौधे से पौधे का अंतर 10 सेमी एवं कुल पौध संख्या 3.50 लाख प्रति हेक्टेयर तक रखना चाहिए।

खरपतवार प्रबंधन:-फसल बुवाई के 0-3 दिन के अन्दर पेण्डिमेथलीन 38.7 (सी.एस.) 700 मिली. /एकड़ की दर से छिड़काव करें। खेत मे पर्याप्त नमी होना चाहिए। फ्लेट फेन नोजल का प्रयोग करना चाहिए। छिड़काव करते समय पीछे की तरफ चलते हुए प्रयोग करना चाहिए। बुवाई के 15 दिन बाद डोरा चलाकर खरपतवार नियंत्रण करें। बोनी के 20-25 दिन बाद क्विजेलोफाप इथाइल या प्रोपाक्युजेफोप की 250 ली प्रति एकड़ व्यापारिक मात्रा का स्प्रे किया जा सकता है ।

सिंचाई प्रबंधन:- जमीन में दरार पड़ने पर आवश्यकतानुसार सिंचाई करने पर उपज में वृद्धि होती है। लम्बा सूखा होने पर फूल एवं बीज बनते समय सिंचाई करें ।

पौध संरक्षण :- आल्टरनेरिया, सरकोस्पोरा एवं जड़ सड़न के लिए कार्बेन्डाजिम 1 ग्राम एवं मैंकोजेब 2 ग्राम प्रति किलो बीजोपचार करें। आवश्यक होने पर दवाओं का दो बार स्प्रे किया जा सकता है।

कटाई एवं गहाई :- पत्तियों के सूखने, बोड़ी के भूरे या काले होने पर कटाई करें। सूर्य की धूप में एक सप्ताह सूखने के बाद लकड़ी के डंडे से पिटाई कर गहाई करें।

भण्डारण:- गहाई किये हुये बीज को उड़ाकर साफ करें एवं 8 प्रतिशत नमी रहने तक छाया में सुखाऐं एवं उचित भंडारण करें।

उर्वरक प्रबंधन :- अच्छी उपज के लिए 8 किलो नत्रजन 8 किलो फास्फोरस एवं 4 किलो पोटाश प्रति एकड़ आवश्यकता होती हैं। जिसके लिए 9 किग्रा यूरिया, 50 किग्रा सिंगल सुपर फास्फेट एवं 6.5 किग्रा मुरेट आफ पोटाश बुवाई के समय आधार रूप से डालना चाहिए एवं शेष 4 किलो नत्रजन (9 किग्रा यूरिया) बुवाई के 30 दिनो के बाद प्रति एकड़ की दर टॉप ड्रेसिंग के रूप में से डालना चाहिए।

सिंगल सुपर फास्फेट का उपयोग करने से 12 प्रतिशत सल्फर एवं 21 प्रतिशत कैल्शियम प्राप्त हो जाता है। अतः अलग से सल्फर देने की आवश्यकता नहीं होती है।